घण्टी

ईशा सरदेशाई द्वारा पुनर्लिखित कहानी

शाम का समय था। सूरज क्षितिज पर था, अपने प्रकाश से वह धरती के उस विस्तार पर सुनहरी-गुलाबी छटा बिखेर रहा था जो पिछले अठारह दिनों से कुरुक्षेत्र की युद्धभूमि बन गया था। वातावरण शान्त था, एक अप्राकृतिक-सा मौन छाया हुआ था, कुछ दिन पहले यहाँ जो घटित हुआ था उसके बिलकुल विपरीत। इस भूमि पर अभी-अभी एक महायुद्ध, एक धर्मयुद्ध हुआ था—अन्धकार और प्रकाश के बीच, धर्म और अधर्म के बीच हुए उस भीषण युद्ध का अन्त हुआ था जो कि महाभारत की रचना का आधार बना।

जिस राजसिंहासन के लिए यह युद्ध हुआ, उसके उत्तराधिकारी पाण्डवों ने कौरवों पर विजय प्राप्त कर ली थी जो कि उनके अपने सगे-सम्बन्धी थे और जो उस राजसिंहासन पर अपना अधिकार जमाना चाहते थे। यह बिलकुल स्पष्ट था कि पाण्डवों की विजय, धर्म की विजय थी; परन्तु यह बिना किसी बड़ी हानी व बलिदान के नहीं मिली थी।

महान योद्धा, पाण्डुपुत्र अर्जुन उस दिन युद्धभूमि पर चल रहा था। उसके साथ थे, भगवान श्रीकृष्ण जो युद्ध के दौरान अर्जुन के सारथी रहे थे।

अर्जुन का चेहरा उदास और मुरझाया हुआ था; वह आस-पास के परिवेश को ध्यान से देख रहा था। कुछ स्थानों पर अब भी धूल उड़ रही थी; हर थोड़ी दूरी पर जलती चिताओं से उठने वाली राख से जाकर मिल रहे धूल के बादल उस विध्वंस के ऊपर छाए हुए थे।

चलते-चलते वे दोनों एक रथ के पास से गुज़रे जो उलट गया था। उसके पहिये टूट चुके थे और उसके आरे हर तरफ़ से बाहर निकल रहे थे। वह ध्वज जो कभी उस रथ का गौरव बढ़ाता रहा होगा, अब फटा हुआ और बेजान होकर मुड़े हुए स्तम्भ से लटक रहा था।

यह विषाद अर्जुन के लिए असहनीय हो गया।

उसने भावनाओं से व्याकुल, रुँधी हुई आवाज़ में कहा, “हे श्रीकृष्ण, मैंने आपकी बात सुनी। आपने जैसा कहा, वैसा मैंने किया और यह युद्ध लड़ा।”

युद्ध शुरू होने से ठीक पहले जो हुआ था, उसके विषय में अर्जुन बोल रहा था। उस समय, अर्जुन का मन सन्देह से घिर चुका था; वह इस बात से अत्यन्त व्यथित था कि उसे अपने परिवार के विरुद्ध युद्ध करना पड़ेगा और वह युद्ध न लड़ने का हठ कर बैठा था। तब भगवान श्रीकृष्ण ने प्रज्ञान से पूरित श्लोकों द्वारा अठारह अध्यायों में अर्जुन को उसके कर्तव्य का स्मरण कराया था; ये अठारह

अध्याय बाद में श्रीमद्भगवद्गीता कहलाए। भगवान श्रीकृष्ण के हरेक उपदेश के साथ अर्जुन का हठ कमज़ोर होता गया; उसकी समझ बढ़ती गई। उसने अन्ततः भगवान के शब्दों में निहित सत्य को स्वीकार किया, और वह वीरतापूर्वक लड़ा।

परन्तु युद्ध के परिणामों का सामना करना, भीषण विध्वंस को इतने समीप से देखना, उसे दोबारा अनुभव करना, एक और ही बात थी। जब अर्जुन ने युद्धभूमि के चारों ओर अपनी दृष्टि डाली, उसके मन में एक द्वन्द्व होने लगा, उसके मन की व्यथा और भी बढ़ गई। उसने अपने धर्म को समझ लिया था और उसे स्वीकारा था; उसे निभाया भी था। परन्तु इस परिणाम तक पहुँचने के लिए जो मूल्य चुकाना पड़ा था, उसे देखकर उसके मन में एक संघर्ष चल रहा था; धर्म के विपरीत शक्तियों से घिरे इस संसार में धर्मसंगत कर्म करने के मार्ग पर चलना कितना भयावह और कष्टदायी रहा था।

विलाप करते हुए उसने श्रीकृष्ण से कहा, "देखिए इस युद्ध का क्या परिणाम हुआ। इतनी मृत्यु! इतना विनाश! मानवता के टुकड़े-टुकड़े हो चुके हैं। संसार तहस-नहस हो गया है। ऐसी परिस्थितियों में कौन सुरक्षित है? कौन संरक्षित है? इस दुःख और विषाद से भला कौन बच पाएगा? क्या भगवान यह सब कुछ देख भी रहा है?"

भगवान श्रीकृष्ण अपने प्रिय शिष्य के इन शोकाकुल वचनों को सुन रहे थे। वे चुप रहे। अर्जुन जिस तरह बोल रहा था, उससे वे समझ गए थे कि वह और भी बहुत कुछ कहना चाहता है।

सच ही था, अर्जुन आगे कहता गया। "मुझे नहीं लगता कि कोई भी सुरक्षित है," उसने कहा; उसके स्वर में बेचैनी बढ़ रही थी। "मुझे नहीं दिख रहा कि कैसे कोई भी संरक्षित है। वे हो भी कैसे सकते हैं? कौन है जो उनकी रक्षा करेगा?"

कुछ समय तक अर्जुन इसी तरह बोलता रहा—प्रश्न पूछता रहा, विरोध करते हुए अस्वीकृति दर्शाता रहा, आकाश की ओर देखकर याचना करता रहा। अन्ततः, भगवान कृष्ण बीच में बोले।

"क्या तुम्हें सचमुच ऐसा लगता है, अर्जुन? कि कोई सुरक्षित नहीं है?" उन्होंने पूछा।

अर्जुन ने बिना कुछ कहे अपने आस-पास की रक्त से सनी, जलती हुई भूमि की ओर संकेत किया।

"यदि ऐसा है तो आओ मेरे साथ," भगवान ने कहा।

वे अर्जुन को युद्धभूमि पर और भी आगे ले गए; दोनों ऐसे स्थान पर आ पहुँचे जो अत्यधिक उजड़ा हुआ लग रहा था। वह थोड़ा-सा धँसा हुआ था और उसमें दरारें पड़ी हुई थीं। बहुत-से योद्धा उस पर गिर गए होंगे और उस भूमि पर बहुत-से शक्तिशाली दिव्यास्त्रों का प्रयोग किया गया होगा।

कुछ ही क़दम दूर एक छोटा-सा वृक्ष था। युद्ध के दौरान वह बुरी तरह से जल गया था और उस पर शायद ही पत्तियाँ बची थीं। बस एक लम्बे-से पतले तने के अतिरिक्त जो बचा था वह थी, एक नाज़ुक-सी शाखा। एक छोटी-सी गौरैया उस शाखा पर बैठी हुई थी और उसकी आँखें इधर-उधर देख रही थीं, मानो वह किसी का इन्तज़ार कर रही हो।

श्रीकृष्ण ने उस धँसे हुए स्थान के सुदूर किनारे पर इशारा करते हुए अर्जुन से कहा, "वहाँऽऽ देखो, क्या तुम वह देख पा रहे हो?"

अर्जुन ने कुछ क़दम बढ़ाए और श्रीकृष्ण जिस ओर इंगित कर रहे थे, उस ओर ध्यान से देखा। भूमि पर एक पीतल की घण्टी पड़ी थी जिस पर लाल रंग की मोटी-सी डोरी बँधी हुई थी। वह उस जानवर के गले से निकलकर गिर गई होगी, जिसका युद्ध में उपयोग किया गया होगा [शायद घोड़ा, या फिर हाथी]। घण्टी ज़मीन पर सीधी गिरी थी यानी उसका मुँह ज़मीन पर था और डोरी बँधा हुआ हिस्सा ऊपर था।

अर्जुन आगे बढ़ा और घण्टी के बगल में झुककर देखने लगा। वह साबूत दिख रही थी; उसकी सतह पर धूल की बस एक परत जमी हुई थी।

"मुझे कुछ सुनाई दे रहा है," अर्जुन ने अचानक कहा। वह और पास झुका और उसने अपना कान घण्टी से लगाया। वह बहुत धीमी थी, पर हाँ बिलकुल, वहाँ कुछ था ज़रूर। किसी तरह की खरोंचने की आवाज़।

भगवान की आँखें चमक उठीं। उन्होंने कहा, "अच्छा? फिर घण्टी को उठाकर देखो तो, क्या है उसके नीचे।"

भगवान के आदेश का पालन करते हुए अर्जुन ने अपना हाथ आगे बढ़ाया और धीरे-से वह घण्टी उठाई। उसने जो देखा, उससे वह आश्चर्यचकित रह गया।

"देखिए!" उसने भगवान श्रीकृष्ण से कहा।

घण्टी के नीचे, धूल के एक छोटे-से ढेर पर एक छोटा-सा अण्डा था। उसकी सतह पर हलकी-हलकी दरारें आ गई थीं और ये दरारें पल-पल और भी गहरी होती जा रही थीं, जैसे अन्दर से कोई धक्का मार रहा हो : वह अण्डा फूट रहा था।

भगवान श्रीकृष्ण और अर्जुन देख रहे थे—पहले एक नुकीली पीली चोंच, फिर सिर, और फिर एक पंख और अन्ततः चिड़िया का बच्चा धक्का मारकर पूरी तरह अण्डे से बाहर आ गया। उसकी आँखें भींची हुई थीं और अपने नए परिवेश में ढलने का प्रयास करते हुए वह ज़ोर-ज़ोर से काँप रहा था।

तभी पंखों के फड़फड़ाने की आवाज़ आई। उस पेड़ पर बैठी गौरैया उड़कर नीचे, इस बच्चे के पास आ गई थी। उसने उस बच्चे को अपने पँखों में भर लिया और बच्चे की कँपकँपी बन्द हो गई।

अर्जुन ने भगवान की तरफ़ देखा। माँ और बच्चे के बीच के इस मर्मस्पर्शी पल को देखकर भगवान के चहरे पर एक मन्द-मन्द मुस्कान छाई हुई थी। भगवान ने ऊपर देखा और उनकी आँखें अर्जुन की आँखों से मिलीं। शान्तभाव से अर्जुन ने अपना सिर झुकाया और भगवान को प्रणाम किया।

सन्ध्याकाल की रोशनी में, युद्धभूमि पर उड़ती हुई धूल और धुआँ अब धुँधला व चमकदार दिखाई दे रहा था। गौरैया माँ अपने बच्चे को पंखों में समेटे हुए थी। एक बार और, जी भरकर उन्हें देखने के बाद, भगवान श्रीकृष्ण और अर्जुन आगे बढ़ गए।

यह कथा भारतीय परम्परा की एक सुप्रसिद्ध कथा से प्रेरित है जो मार्कण्डेयपुराण जैसे शास्त्रों में वर्णित है।

© २०२१ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।